মূল্যঃ—অগ্রিম বার্ষিক ৮০, ডাক মাশুল ১।।০, ষাথাসিক ০৭০, ডাক মাশুল ৭০, ত্রৈমাসিক ২।১০, ডাক মাশুল।১০ আনা। অনগ্রেম বার্ষিক ৮।।০, ডাক মাশুল ১।০টাকা বিজ্ঞাপন প্রকাশের মূল্যঃ—প্রতি প'ক্তি, প্রথম, দ্বিতীয় ও তৃতীয় বার ১০, চতুর্থ ও ততোধিকবার ১০আনা। ইংরেজী প্রতি পংক্তি।০আনা।

৭ম ভাগ

कलिकां जाः ५३ जार्था श्रम्भि विवास, मन ১२৮५ मान । हे १२७७ नर्वस ३৮१८ श्रं जम।

८३ मश्था

विड्वां शन।

वागद्गाथ नाउक।

धक छोक। बीहरा जारा श्री । मूला ३ किगाञ्चल ०० व्याना। कलिका जो से गिन दिशेष (श्रम) शहलाडामात्र मकल शुरुकालाय शिख्या। (मा-ल्ल)

> कि ভয়ा क इ जिक! नां छका

धाई शुखक ढाका वाबूत वाकात वाबू : ट्यांति लाल दाश (ठीश्रुति गर्गणांत्र वागांश उन्हर्गादात्र निक्टे उ जन्, दक, हरिंदिशाधारियत ८ गिठे हे लि - त्रांशाल माम वटना विषा दात ्माकारन शास्त्रा शाहात

E. M. SIRCAR'S ABROMA AUGUSTUM. वाधक दिननांत्र मदश्य

थोत्र धकवाद मिवटनई यखना यात्र छ मखाटनार-जित वाशिक मृत करता छेङ छेम्थ এवर मिवरनत्र নয়ম ডাক্তার ভুবন মোহন সরকারের নিকট কলি-। क्रिका दर्शियां वा मुख्यां वा या वा वा वि है व न व छ यहन भाउरा यारा मूला आ०।

रामिए(शिक हिकिएमा विख्वान, खायम जात, ।थग थए। छितिराति लाल छात्र छानी छ। ला ११०, एक गालल ००। जनाना थल गुर्का-ক্ষত হইতেছে। কর্ণভাষা লিসাইটীট ৩৪ নং ভবনে। जुला शार्शिइटल श्राख्या माइट्य।

यक्त्रल एटज्भा

मक्खलवां मी बाजा, जि.मनांब, वावमांबी अ जानांना খ্রান্ত লোকদিগের কলিকাতায় যদি কোন দ্রব্য খরিদ রিতে হয় তাহা আমাদিগকে লিখিলে আমরা অতি রর ও স্থাপ মূল্যে তাহা ক্র করিয়া যথা স্থানে প্রেরণ রিতে প্রস্ত আছি। যত টাকার জিনিশ খরিদ হইবে। হার প্রতি শতকরা আমরা পাচ টাকা ক্মিসন কাটিয়া गा जाड गरवं माज २ होका भाषा है उ इरिया অমৃত বাজার পতিকার প্রকাশক জীযুক্ত বাবু চন্দ্র মাথ व्याग्र महाभारग्र वर्गावत जार्जात छ होका शांठा हेटल जा-भवा जोड्। প্राथ इड्व। कोड्राट्या (कान श्रुक कि जना কোন বিষয় ছাপাইয়া লইতে হইলে তাহারো বিশেষ ज्युतिथा कित्रा मिट्ड शांति।

बीजनील हस बहुगहांग जल दर्भः

ত্ত্রকাপড়, প্রস্তক, স্টেসনারি, ফার্ণিচার ইত্যাদি যত প্রকার দ্রাতকলিকাতায় পাওয়া যায় তাহা আমরা প্রেরণ করিতে প্রস্তুত আছি। এতাদ্তিম অতপ সুদে যত টাকা হউক কর্জ করিতে হইলে তাহারও যোগাড় क्तिशो मिट्ड शोरियन।

मश्कां भक जुद्रत यद्दे व

गहरा गहरा शहरा शहीका द्वारी धरे छेस्ट्य (19) भारोकिंड इहेशार्छ। इननी अ वर्षमान शक्ति मः जामक जात याशो फिंड (कानां में देश) वाङ्ला जा वावरांत रहेट्ड्डि। खूब, क्षोरा शोए। (बदन विश्व)

व। তাভিরিক্ত কুইনাইন ব্যবহার দারা জম্মে তাহার বিশেষ প্রতীকারক। মূল্য २ টাকা याश डाक्या छल।

जार्नादात्रात म्होयथ।

विश्लिम शत्रीका षाता थाजिणा इहेमाए रिय इंडा घाडा मर्खि थाकांत्र जर्भ धाक काटन जा-(व्रांशा इय । य ला ।।। । दोका या या प्रांक या छना

हाकदबादशत यदश्य ।

তানেকের বিশ্বাস যে, টাক কখন জা-রোগ্য হয় না কিন্তু এ ঔষধ ব্যবহার করিলে (म यड ज्याहे मुद्र इहेर्य। य ना आ । । । विका यांग्र एाक यां ल्ला।

डेल छेषध कर्यक्रिं कर्ष छ्यां निम् छि, हे ७८ नः ज्यान जीयूक (वहाति नान जाइड़ीव निक । भा अया या इत्य

THE UNIVERSAL MEDICAL HALL N. C. PAUL AND CO'S MOST WONDER-

FUL PILLS!

A Specific for chronic and malarious fevers, enlarged spleen and liver.

जाजां वर्षिकां!! পুরাতন ও মালেরিয়া অর্থাৎ সংক্রা-यक ज्दात धवः श्लीहा ७ यक् ठ द्वादात्र यहा-

खियश ।

उशदा छ कतिया थाथारम आदिशा शदत जाला कारला मरधा श्रनकात शीष्डि इ-इटि खाश मकामा दमथा याश। धक खकादत ज्लासहे छाजीयगान इहेट जिल्ला स्था मकल खेयथ ष्ठांत्र। (तार्श (कवल श्रिक शांक, धक वादत (ज्ञांश विनाभ इय ना। कांत्र (य श्यांख या।-(लितिय़ा विय भाजीत इहेट निर्शं ना इय म এই নিমিত্ত আমরা বহুতর বহুদশী ও সুবি- ব্যবস্থা হইয়াছে দেখা যায়, কিন্তু দে সকল না-খ্যাত চিকিৎসকের সহিত প্রামশ করিয়া এই টককার সকল সময়ে সে িয়ম রক্ষা করেন নাই। जाना कार्या नामक (द्वोशाद्वन विका श्रकाम (भ एउयंत नार्वःक एहे ब्री छी मण्यू निकास द-করিতেছি। ক্রমাগত গত চারি বৎসরাবিধি ক্ষিত হইয়াছে এবং নাট চ খানি পাঠ করিয়া ভাঁহার नानां शकात, शतीका पात्रा हेहा कानिट शां त्रा शिशांटि (य (वर्गेट्रायथ भागांत्र) সহত্র উল্লিখিত রোগাজান্ত ব্যক্তিগণ সম্পূর্ণ जारताशा लाङ कित्रशाट्य, ध्यमन कि योश्त-हे॰ त्रांकी हिकिৎ मांस वित्रक इहेसा वाकाना किक्टिमां श जादिया श लां ज कि कि विट भारिय न नाई, डाँहाँगें (इरे बहिका (ग्रायन करिया) जारवां ना ज कविशार इन। इंश भवीत इन इंटि कुईनाईरनत ७ गार्लितियांत्र विय निर्श्ठ कत्रियांत । अक श्राकांत देनव अवध विनदम वना याईटड शाद्य। थाडि दमोडीय ७०डी बहिना जार्ड धवर छेड़ा भिवनामित्र नियमार्ग छेड़ात मिह्ड कार्ट

शिक्ति (कोरोब मुला अ० होको एक यो

लल ७० जाना। धहे माल तन २ है। त्लो है। जना-अारम गाइएक शादत। जाशत

जामबा वर् मिनमांविध विला व इहेट व हैं-वाकी अधानि जानाहेश जब नगती. ज ज ভারতব্যের নানা স্থানে বিক্রেয় ও প্রেরণ ক॰ त्रिट्डिश (धक्राली (य मकल यर्श्वय डेड अध्यामित्र निराम वित्वहना क्रिया थारकन अ यू-लंड म. ला छेलम र्रम का का कित्र कि है छ। कर्त्रन डाँहामिदशत्निक छ जायामिदशत् निद्यम् । धई द्य यथन यादा लाह्यांजन इहेरवक जानू शह कतिया जामामिशक लिशिल ७ मला (श्रात कितिल व्यक्ति मज्ब (श्रेष्ठ) कि बिर्ग, ख अयर्थ ब म् ल्ला त मुफिड डोनिको विनो मृत्ना विनो छोक मोश्वरन शार्वाहेव धवर अयभाषि जिन्न जाशनात्र ज्वा यां शि था आ जन इहेर वक जाहा ज शल म, त्ला क्य क्रिय़ा शांठाई ए शांत्रिय छोड़ांत्र क्यिंगन भाज कर्ता ए शांक होकां मांब महेव।

面型则何何 इडेबिडांब्रटमंग (याँडरक २४७। २४८ न१ जाशांत किएश्रेव (क्रा-कलिकां जा, भाजां वां जां ता

(गोटएथंत्रनारेक मूला ५० काना एकराछन /०

THE plot of the work was evidently suggested by the Ramayana. The author seems to have no ordinary power and poetical images and we meet in it with scenes deeply pathetic. Bengalee.

त्रायण वार् माधात्रन तीजित व जिज्जा उहे नोहिटक धकिन जिस जाया रावहांत कित्रा एक्न। निड्डीय यात्रमात शमा जार्ड निड्डीय, डड्डना त्राम बाबू नाहिकशंड शांखगंदंवत छे:बिंज छ-मर्यत ভाব সকল नियं उदे व्याधिकां कर हरण क्षकां त कां कित्रिश्राष्ट्रम । वामला इहे धक थानि नाहेदात श्री म २ शेर जिल्ला इटिश कि जिल्ला शिना किरिज मृत्ये आयरा शीजिमां किरा मि । - अग्र वोङ्गांत शिंबका शेंब्रिं।

का निश् अ मश्क्र ज नाहेखां हो धरेश अगृज बाजांत्र शिक्ति वाशिता थार्थारा।

> <sup>6</sup> किकिएमां ज्ल-गांगिक शंब्र जाश्विन गाम इहेट छाउँ

त्राम ३२ (शकी ডাক্যাগুল

इं १ ज जा जित्र विश्वाम। করিতে পারেন, গালি তিরস্কার অটল সুদয়ে ত্র। থাকাতে এক সম্পূদায় অপেকা অপর সম্পূদা ইংলওবাসীদিগকে কাঁসয়া কি আমেরিকায় বস্ত্র কাতি পারেন, পারিবারিক বফ দৃঢ়তার সহিত য়ের প্রতি অপেকাক্ত অধিক অনুগ্রহ দেখান কি অন্যকোন বাণিজ্য দ্বেরে ব্রসায় করিবার সহ্য করিতে পারেন, কিন্তু অর্থোপার্জন সম্বন্ধে হয়। ইংরাজেরা এই রূপ তক করেন। ভারতবর্ষ নি হত তুলাপার্ট প্রস্তুত করিতে হয়-নাই, কান বি। উপস্থিত হইলে তাহার অস্থির হইয়া যদি শ্বাধীন হইতেন তাহা হইলে ইংরাজেরা এরপে ইংলওবাদ, নিগের ভিন্ন দেশীয়-পড়েন। মিয়ার সাহেব ফাটকে গিয়াছিলেন ইহা তক করিতে পারিতেন না। কোন রাজা ফদেশ বিগের কিট আপন পৈতৃক সম্পত্তি সহস্কে দরবার লইয়া এত গোল করার কারণ এই এবং আদামের জাত বাণিজ্য ধৃংশ করাইয়া অপর দেশের বাণিজ্যের করিতে হয় নাই। এরূপ হুদ্দর্শ যদি কোন কালে এক ফিবিন্সের জন্যে যে তাহারা এরপ কফ প্রকাশ যাহাতে শীর্দ্ধি হয় এ রপ নিয়ম কখনই প্রচলিত বার ইংলণ্ডের পক্ষে ঘটিত,তাহা হইলে ইংরাজেরা যে व विश्वादिन जोर्गत कार्न जर्म जर्म ইংরাজ মাঝেং ফাটকে গিরা থাকেন, তহবিল করিবার ক্ষমতা দেন নাই। ইংরাজেরা কি মনে পারিতেন এবংইহাও জানিতেন যে আমা কেন্দ্র গরি ভছরপ এবং নরহত্যা অপারাধে ভাহার। অনেক ভাবেন যে ভারতবর্ষবাসীয়া ভাহাদের সুখ স্বচ্ছল- কেন, কেন আমা সময় সময় ভাহাদের সুবিচারে সময় পূত হন এবং দণ্ডিত ত হইয়া থাকেন, কিন্তু তা সমৃদ্ধির নিমিত্তই কেবল জন্ম এছণ করিয়াছে? বৈরক্তি প্রকাশ করি? যাহা হউক, যে দেশহিতিষী ভাষাতে ইংরাজদিগের মধ্যে এত গোলদোগ, হয় আমেরিকায় যখন দাস ব্যবসায় প্রচলিত ছিল, ব্যক্তিদিগের অনুথাছে ম্যাঞ্চেরবাসীদিশের মধ্যে ন। পাছে মিয়ার ও ফিবিন্স রাজ বিগারে দণ্ডিত তখন সেখানকার ইংরাজেরা বলিতেন যে বিধাতা এই রূপ সর্বনাশের ক্রন্দন উপস্থিত হইয়াছে তা-হওয়ায় নীল ও চা ব্যবসায়ের কোন বিদ্ন জন্মে তাহাদের সাহাব্যের নিমিত্ত দাদ জাতি স্ফি কিরয়া- হারা স্বার্থক জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন। এবার ইংরা-ভশ্বারা এই নিমিত্ত ক্ষিপ্তবিং হইয়া উচ্চেন। ছেন। ইংল্ণু বাদীরা কি আমানিগকেও দেই রূপ জেরা কতক বৃঝিতে পারিবেন যে ভারত जार्गाम जायां नाम ध्थन उक्षांख र स नारे, कर्व वि ক্ষান্ত হইবে তাহারও চিবানা নাই। এখানে পথ আছে সমুদ্র তাহারা এক রূপ একটেটিয়া ত্রিবি নিবিত ইংলও তারতবর্ষের নিকটি इंश्वाकिपिरात धेई विश्म, बाबात इंश्वाद जारा णालिका महत्य छात्। जिथिक विश्व छिशिष्ड । कत्न कत न्यत्र । का एक विशिष्ट । विशिष्ट व दमनी देशता क क छ लि का १ ए उ श्वांत कल जान स करियोहिन। राथन धारे मंगूपरा कल धार्थान जागरन करा रहा ल्थन हे ता एक द्वा जारिया हित्तन स्व ध कल जारक वार कल्य ना, यु इतार मारिक छोत अ लिय तथालत न्द्रांट कान कनि इहरव ना। धथन (मिन्हिल होत्वर्ष जाशाह शहा इरेटाए व्या व्यापात राजा वाल्य वाश शिष्ट हिंद के वाहार इंश्लिख इंदे के के করা ৫ টাকা শুল ক দিয়া ভারতবর্ষে সূতা ও বস্ত্র করিয়া স্বদেশ অর্থপূর্ণ কিরিতেছেন ভাষার সমুদয় আবো ভাগ্যবতী হন এবং ভাষার এরপ স্থান সমু इर्वाइइ मङ्चा। यादकिछ। इव मीरिटगंत इद्धा এই নিমিত মরকামা পড়িয়া গিয়াছে। তাহারা স্থানে সভা করিতেছেন। ল্যাক্ষুসায়ারে এই আমরা কমিশনার হইতেও চাহিনা, আমাদের জন্যে তাহা হইলেইংলণ্ডের আরো চৈতন্য হইবে এবং তি জাকস্ন সভাতে বক্তা প্রদান কালে বলেন যে, ইহাওনা হয়, এ রূপ নিয়ম হউক না কেন যে ২০০০ का है। कल ध्रः ध्रक शंका ते . जें ज शंकित शंदि इइंटि जूला जानियां वाय ध्थां क.त लाकिप्तात काश्य जार्राई विकी इहेर्य, यास करिया व्यना (मदन्न देश विक्य दर्भ (थारन कतिव त थार्या-জন इहेर्य ना। सूख्तांश खांत्र दर्श रोका अ क्यानात অপেকাকত অভাব সভ্তেও বিশ্বর লভা দাড়াই ব। लाकिमागरवानीया इंश छनिया थटकवाद्य व्यक्त प्रशिष्ट्रिक्त। विला इंटिंड डात्राडवार्य।

শত কর। ৫।৬ টাকা করিয়া শুল্ক লাগে, অহচ গিয়া সদেশে কার্যা পাইবার নিমিত্ত নিবিল, মেডি-ইংর জ জাত অপমান অবিচলিত দিতে সহ্য ভারতবর্ষবাদীদিনের কিছু লাগিব না। এ নিয়ম কেল প্রভৃতি সর্বিশের শিক্ষা করিতে হয় আই, करतन ना, कि. ख आश्रामिशाक विश्वां म (खांत मत्न ভাবেন ? এ দেশের অর্থোপার্জনের যত গুলি বর্ষ কর্তৃক তাণারা কত অর্থ উপাজ্জন করিতেন এব कतिया विनिया व्याट्मा कि कि, व्यापता नय কাপড় ও হ'তার ব বদায় দ্বা দেশে কিছু টাকা তাহার এরপ সুসন্ধান সকল জমেন যে তাহারা তা রাখিলাম? আম্রা ইংলতে বস্ত্র বিক্রম করিয়া ত ত্বর্গ জাত দ্ব্য প্রেরণ করিয়া ইংলতের সূতার কল আর স্বদেশের বৃদ্ধি করিতেছি না ৷ তাহার ৷ এ দেশ বন্ধ করিতে পারেন, কাগজের কল এবং অন্যান্ হইতে বস্ত হুতা বিক্র করিয়া যে টাকা গুলি কল বন্দ করিতে পারেন, তাহা হইলে তাহার यदिन लहेश रहित छ। दिन, छ। हाई आरता यदिन हेश्लख्त कात अके दे हे हना कतिशा निद्यन अव শে রাহিবার যত্ন করিতেছি। ইছাও কি তাহাদের তখন ইংরাজেরা বুঝিবেন যে ইংলও ভারতবর্ষের সহাহয় না? ইংরাজেরা থানের ও স্থার শুল্ক সভাবজাত বাণিজা ব্যবসায় ধংশ করিয়া কা উঠাইয়া দেওয়ার প্রস্থাব করিভেছেন। এ প্রস্থা- লোককে অন্ন কটে ফেলিয়াছেন, কভ পরিকা ৰে ছামরা সমত আছি, কিন্তু তাহা হইলে অনণনে মৃত্যু প্রাদে পতিত হইয়াছে এবং কি ক্র আমাদের প্রতি তাহারা যে কোটী২ অবিচার দেশ নিধন হইয়া পরিয়াছে। তারতবর্ষ ব্যা তানিয়া ল'ভ করা দূরে থাকুক, বরং ক্ষতিএছ না ইউক গুটি কয়েক তাহাদের রহিত করা ন্যায় দয় জন্ম এছণ করেন মাহায় ইংলপ্তে গমন করিছ সঙ্গত। আমরা এ দেশের গ্রারী পদ চাহি না, তথাকার বড় ২ চাকুরি গুলি প্রাস করিয়া মধ্যবং वागरा (लक्टिंदनके गवर्गत इइटेंड ह. इ ना, সম্মীয় একটি সভার আধবেশন হয়। কর্ণেল কেন ডি. ইকুট মাজিষ্টেটের পদ গুলি থাকুক না? বুঝিতে পারি বন যে ভারতবর্ষ কে পরাধীন আদিঃ যদি এরপে একটা হন্ত্র ফার্মাতে ৬০ হাজার সূতা কি ৮০০ টাকা বেতনের পদ গুলিতে এ দেশীয় ভিন্ন কি রূপ করিয়া ভক্র বংশ সমুদয় ভারতবর্ষ হইটে আর কেহ নিযুক্ত না ইয়? সিবিল সরবিশ লোপ প্রাপ্ত হইয়াছে এবং তাবং হিন্তু জাতি ভারতার্যে চালান যায়, তবে ইহা ইংলণ্ডে খাটাইলে প্রীক্ষার স্থান ইংলণ্ডে না হইয়া এখানে হটক না তব তি হইয়াছে। (य लाड़) इड़ेर्व डांवडवर्श डमर्शका वर्मत थांश किन ? मिविन मत्विम किन, डेब्रिनिशाहिर, वार्ति-২২৮০০০ টাবা অধিক লত্য হইবার সম্ভাবনা। স্টারি, মেডিকেল সরবিদ সমুদয় পরীকার স্থান ইংলণ্ডে কয়লা এবং টাকা স্থলভ বটে, বিল্ত ভার- গুলই িলাভে। যে ইংরাজেরা এরপ অতিবার লভ নর্যক্তের পরামর্শে বাকুব খাঁ সের তবলীয় তুলায় ভারতবর্ষে হুতা প্রস্তুত হইবে, ত্নাত্র পদে পদে করেন, তাহাদের পক্ষে স্থান বিচার লির শ্রণাপ্র হন এবং সের আলি তাঁহাকে হইবার উদ্দেশে কাপড় ও মূতার ওল্ক উচাইয়া করিয়াছেন আমরা এই টেলিগ্রামটী পাঠ বহন করিতে হইবেন', আবার ভারতব্যের প্রস্তুত দেওয়ার প্রস্তাব শুনিলে আমাদের হাসি পায়। বিশ্বয়াপার হই। আমরা রাজকৌশালের, বিশেষতঃ বোষাইতে গুটিকয়েক সূতার কল হইয়াছে এবং ইংরাজ রাজ কোশলের নিগৃত তাৎপর্যা বুঝিতে তাহাতে তাহাদের এই ক্ষতি হইয়াছে যে, বন্ত বিক্রয় পারি না, স্তরাং সের আলি পূর্বে প্রতিজ্ঞা দ্ব'রা এদেশ হইতে তাহারাষে টাকা গুলি স্থদেশে করিয়া শেষে কেন যাকুব খাঁকে কারাকল্প করিলেন, লইয়া যাইতেন তাহাই লইয়া যাইতে পারিতে- লডনর্থক্রেকই বা কেন ভাঁহাকে আঝাস দিয়া আ-ছেন না, ইহাতেই ভাহাদের হৃদয় কটে ছট ফট নিয়া এই বিপদে নিঃকেপ করিলেন ভাহা উাহা-করিভেছে। ইংরাজ মহাশয়েং। তোমরা একবার রাই জানেন। তথাচ সের আলি ষেইহা ছারা বিশাদ-ত কুকলাগে ভাষা উঠাইয়া দেও- মনে করিয়া দেখ দেখি যে যাহাদের দেশ হইতে ঘাতকতা পাপে কলুমিত হ্রগছেন ভাষার কোন ষেট সেকেটারির নিকট ভোমরাকোটী কোটী কর্থ বহুসর বংসর স্বদেশে ভুল নাই এবং এরপ বিশাস্থাতকভার কার্য্যের र्ग धोश करतन नारे। लहेशा सहिएक, यार्गिंगरक ममूनस देहि शेन महन लड नर्थक्क नाम मध्या थोकांस व्यापास হুইয়াছেন। ভাষা- হইতে বঞ্চিত করিয়াছ, যাহাদিগকে নিজ ধনে মনে অত্যন্ত কট পাই, সূত্রাং আবার মঞ অন্যায় বিচার চোর করিয়া রাখিয়াছ, ভাছাদের মনে কত বেদনা টেলিপ্রাম পাঠে জানিশ্ম যে লভ নর্থক্তক বে तः गारिक- लार्शः व मिलीय मिर्शत यान जिम्हा कंड क्रार्थ जालित कार्या जनूर्यापन करतम नाई, टी

व्यागादनत गदन क उ कछ निट उट्टन खोश खोशा वृत्यि एउ श्रियोत्न भनी। यमि छात्र व्यवं छात्रावछी इन धव मच्थानाग्रक विशेष जवशाग्र निः एकशे कतिए शार छोर्च छोडि कि क्रिश व्यविष्ठात करा इहेगार्छ।

ত গাবর্ণ- কত কট দিয়া থাক, তাহা তেংমরা অনুভব করিতে কাবুলের রেলিডেণ্টকে টেলিগ্রাফ করিয়াছে ए एक छेत- भात ना। इंश्माध कथन शहाधीन इहा नाई। इंश्माध- जिन त्तर जा नाक जलन (म, मार्ड नर्थक दि

कां ताकक कतियाद इन ध्वर जिनि याकून थात প্रजि কোন রূপ অভ্য চার না করেন, তখন আমাদের श्रुपद्यत कडकछ। ভात छएखानन इइन। रमत আলি যদি প্রকৃত বিশ্বাসঘাতকতা করিয়া তাঁহার জ्यान श्वाक काताकन कतिया थाकन, लड नर्थ-क्क य ভाशां वितक इरेविन ভाशा आमना ध मत्राम श्रेकान ना इइत्न उ द्विट शाहिणाग, किस व्यागता अकिंग विषय त्रिक्ष व्याजिकाग ना। याकूव थाँत महिङ তাঁহার পিতার সিঘ্লনের श्रीमणं लए नर्थकक कि क्रिशं फिल्मिन? इंश्त्रां ज्ञा कि जादनन ना (व कावृलिय़ा विश्वानघाउक, इक्षल এবং কলছপ্রিয়? যাকুব খা দের আলিকে পদে২ वित्रक क्तिशास्त्रम, भात जालि जिल्न य योक्व था जारा जाराका क्रमजावान व्यव (मर्भन्न मर्था ञान थिय। (मत ञालि इशं जानिन, यिष তিনি তাহার কনিষ্ঠ পুত্র আবহুলা জোনকে আপন वाजा প্रদান করিবেন এই রূপ অভিপ্রায় ব্যক্ত कतियादिन किन्छ जिनि य मिन श्रेश्व शाहिर्यन, मेरे जिन य क्वथा जारांक जूत क तिया निष्ण ।। इरेद्यन भूजताः यज मिन याकूत थात भूजा । इहेट्डि उउ पिन ठाँहात भाष्टि नाहै। हे लिन वर्वायान्छ अ अभूमग्न जानिया ज निया अनिया ক রূপে তাঁহারা সের আলির হাতে তাহার পুত্রকে प्रश्रीत योग दग भ कतित्वन ? इटिं शंदित (य भित वालि कोता। ज्ञान कित्रा नाश्य कित्राहिल्ल य, जिनि योक्त थाक जाण्य पित्न ध्वः डाइ कि क्या कतिद्वन, किन्छ हे शांकिता कि पड निर्काध ए एडे अलिथित देश निर्देश कित्री (मत गानित कित देवतीक जाशांत बद्ध गमर्गन कतितनन ? थन (मत आलि उ उँ शंत প্রতিজ্ঞ। পা न कर्ति-लन ना? हे िल गं नियन्छे यमि ध्यान योक्व थारक वक्ता ना करतन जाशा इहेटल जाशापत कि धर्म का इरेदा? जारादित कि थ क क कि कि कि विश्व महत्र अ थनराण उद्देश १ त. ए न क्क ध्रे निमिख मित िक এक क्रिश क्क्र कित्रा भागि है ब्राट्स (य, নি তাহার পুত্রের প্রতি কোন রূপ অভদ **চরণ না করেন।** কিন্ত সের আলি যদি তাঁহার ा बाक्ता क तन ? व्यात (मत व्यानि व शत वरे ांखा (कन शिंजिशांलन कति दिन ? कांब्ल रे॰ तां-शिन न(इ। इंश्तांकिपिशित देमना मायखदक लंदा लक्षा कदत्र ना। इश्दत्रक गार्विषक छ ख ( त्र ञ लित नित प्रक्रिश वादशंत कतिशा मेशाएइन, जाशां उंशां के शिकां विश्वां চরিয়াইছন। কাবলের আমির যখন যাহা ग्रह्म इंश्त्राष्ट्रा डाहाई डीहारक (याग:-रिছ्न। वर्भत्र उ। शक्क मछक क त्रवात भिन्न वार्थ व्यवः वन्द्रक वाक्रम श्रान्ति डीशादमत । भारेट इया ध क्रथ अवस्य हैं लिंग गवर्टमणे धन आत्र जाशत देशत दिनान क्रूग जाति कतिएज दिन ना, कत दशंफ शुक्षक विनय छोट्व निद्यमन तिएउ शाद्यम । कल दमत कालि यमि श्वतर्भत इमार्तितला अरे वा का थि जिलानन ना करतन जारा राम इश्दाकारमत कलक उ व्यथमा नत्र कि भीमा था-इता ? डिशितः यदमरण एक्सर्थ कलक लहेशा व्यविष्ठि ति जिलादान। शिलियान जैशिकारिक यश्न जित-ার করে কি ক্রশিয়গণ যখন ভাহাদিগকেঅ প্যান করে च्या डांश्रा यथम व्यथना व्यथना विकास कित्रा व्यादम त-= वार्श पण (मन, जर्थन (मर्भात यर्थ) कः क रश यांज. इराइ डाइ दिन अखियान अ यय ग्रान्। त थर्स मात्र (कांन कांक इस नारे, किन्छ धरे स्पीय

य छोराजा वोछ्वल भागन करतन, रिन्ह उ

মুসলমানেরা জানে যে ইংরাজদিগের অসাধারণ আজিও শেষ হয় নাই। বোধ হইতেছে আগতক वृद्धि उ वो छ्वल, इंग्रा इंडेर्बार्थ जर्भन्य इंडेन ममुनग्र माफीत ज्ञान विक लख्या इंरेर्वि। जारा আসিয়ায় ইহাঁরা অদ্বিতীয় রাজা ও ইহাঁদের প্রতাপ হইলে আগামী সপ্তাহের শেষে নানার বিচার আরম্ভ ভাঁহাদের বিশেব ক্ষতি ও বিপদ হইবার সম্ভাবনা। এ कलकळ ७ इंगि हुल क त्रिया महा क्रिए পারিবেন না। এ কলঙ্ক ও অপমান অপনয়ণ করিতে इहेल उँ। हामित भारत आलित महन युक कतिए इहेरव धवर गार्नियन्टे कि काव्रलित माज युक्त कतिएं প্রস্তুত আছেন? একবার কারুলের সঙ্গে যুদ্ধ ক-तिया हे ता (जता (यक्रा व्याप्त) व्याप्त का का का का विका ঋণ পালে আব্দা হইয়া পতেন এবং যেরপ বিপদাপন পারেন নাই। আবার কি তাহারা দেই বিপদে शम निः कि क तिर्वन ? यमि शक् छ छ छ । य व প্রবেশ করেন এবং ইংরাজ দৈন্য জয় হয়ী তাহা इट्ला कि का व, ल धक मित्न व नियं जा जा शा अशीनावश्राय त्राथिए शांतिरवन? यज मिन जांश-ता काव ला व्यविष्ठि कतिद्वन, उठ मिन व्यव्हात्र डाँशां मिगां क युक्त मज्जां य थाकिए १ रेप थवः তাহা হইলে ভারত রাজ্য পর্য, ख ছারখার হইয়া याद्दि। व्यावात मगुत्थ विग्म भवा। य मिन काव दन त मदन हेश्तां जपत युक्त आंतु इहरव स्म मिनी क्रिनिय्गान आंनरिक न, जा कर्रिंदि । स्मित ञालि क्रिनियां व भारतागं उ रहेल छात उवर्ष ञावां श ाड विद्याश य हेका कित्रा अथवा अनवधान जो र आंभिनामिश्रांक धारे क्रभे विवाम जात्न निः क्लिभे विद्यार्थ विवाह वहें ब्राह्म मुग्छ जात वर्ष १४०२ कतिर्विन ? इंश्त्रोफ क्रांडि डेड निर्दिश नन। क्या- यादेन त्त्रल : क्रिंडिंड हरेग्रा है। इंस्टिंड शोत यादित धरे निभिष्ठ कार्दान्त समून्य सशदित ৯৭ कांने छोका अर्थाए প্রত্যেক यार्दिन शद्छ প্রতি সন্দেহ হয়। রাজ কেশিল,বিশেষতঃ ইউরোপীয় ১৫৫৩৬০ টাকা ব য় ছইয়াছে। ইছার ৭২৭ মহিলে রাজ কেশিল ভেদ করা এ দেশীয় দিগের সরল ভবল রেল অ'ছে। অরো ১৮৫০ মাইল রেল-व कित्र कार्या नरह। এ ममूमय मद्याम मिथा कि मडा अख अख इंड एडएए। गंड वर्मत मर्क मार्क ला তাহা বিধাতা জানেন। মিখ্যা যদি হয় তবে ইহার ৩১২ মাইল নুতন রেলত্যে খোলা হয়। ইলতয়ের উদ্দেশ্য कि তोश विधां । कालिन। कल खिष्टिम निमिष्ठ गण्ड वरमत ११४२८६ हेन ( এक हेटन २४ त्रांका जांक काल गरा गंग गांल डेल इंड। ध मन) प्रवा रेल्ल रहेड ध एए अति इ रहा। मिक नोनोक लहेशा मधा शाल, मिकिशा श्रीन जोत्रवर्ध खिल शह इट्योविध ४१ लक् हेन खवा ल्या प्रम क्रांत्या शलाहेयाक्न जवर शुं हेरलंख इहेट ज प्रमा हहेयाक । हेरात मूना ব্যক্তি যদি প্রকৃত নানা হন ও গবর্ণমেণ্ট যদি প্রকৃত বরুপ ইংলও প্রায় ৩২ কোটী টাকা এংণ করি-ভাহাকে ফাঁসী দেন, ভাহা হইলে অনেকে শংকা য়াছেন। গত জানুয়ারি মাস পর্যান্ত ভারতবর্ষ করিতেছেন যে, মহারাষ্ট্রীয়গণের মধ্যে গোলযোগ রেলওয়ের ৬২৩:৮ জন মানিক ছিলেন। ইহার উপস্থিত इहेवांत मुखावना। वत्रमायु यु (भान। यद्या व भाज यानिक छ।त्र व्यः व वाम करत्न धवः গুইক্রার রেসিডেণ্টকে বিষ খাওয়াইয়াছেন কি না এই ১ শতের মধ্যে ৪২১ জন মাত্র এ দেশীয়। তাহা বিধাতা জানেন। যাহা হউক তথায়ও রেলওয়ের কত্র পক্ষদের রিপোর্টে জানা যায় যে निर्ভाख कम গোলযোগ উপস্থিত হয় नाई। आवात গত वर्मत २७৮ ही तल्ला इस इस हैन। इस। इहात लड नर्श उनक मित्र आणित श्रिक्ट शिक्षण आखा यथ, ३० ही मश्मां वाता, २० ही ग्रांडी हिट्ट त প্রচার করিয়াছেন তাহার ফলও কি দাঁড়ায় বলা বাহিরে পাঁড়য়া, ২৬টা আগ্ন কর্ত্ক, ১৬৫টা গো, यांत्र ना। এ সমুদর গোলে আম'দের মনে যত ছাগাদি টে নের সন্থা পতিত হইয়া এবং ৩৪টী डे विष्ठ इंडेक आंश्रता रेश बाता थकि मिकांख कति । अनाना कृत्व कांत्र मा मध्य है विष्ठ इता थ द्व हैना পারি। কসিয়ারা ভারতবর্ণের প্রতি আক্রমণ করি- কর্তৃক ৪৩৮ জন লোক হত ও আহত হয়। গত বার যে উদ্যোগ করিভেছিলেন ভাঙা হইতে বোধ হয় বংসর রেলওয়ের নিমিত্ত ৪ কোটা টাকার ভ্রতিধিক ভাহারাআপাতত থিরত হইয়াছেন। বহি শক্র থাকি- বায়েত হইয়াছে। ইহার অন্ধেক গ্রেণ্টেও অ-एक हेश्लिम शर्वियक (म्हणांत्र यहा थंड शाल्यांशं क्षिक दिल कि कि निमानी वहन कि विद्या कि । शंड वाशिहेटिन ना, दिल्विष्ठ लिए नर्शक्क मित्र जा नित्र विश्व जा का जा करा প্রতি যে টেলিপ্রাম পাঠাইয়াছেন তাহাতে বোধ হই- इहेराছে, সে রূপ কাজ কিছুই হয় নাই। ইউরোপীও তেছে ইংরাজেরা আর আমিরের মন যোগাইয়া इ.ल.८५न न।

छोइम म अव दे ियाय आंध्रमानिक नाना मह-क्षि धरे दिनियाम छन्नि श्रकानि इस्माद्र। कानश्री, अहे नारश्री बाबी हरको न कारणम

नटका १७३ न त्यस्य। नार्याय्यन नामक जिल्ले माकी, यिनि नानां क वित्नं कांत्र जानिएन, विलिए एक स्व श्रं वाकि नाना कि ना जाश जिन ठाडेविया डेठिएड भाविएडएइन न।।

कानशूत 38ई नत्वन्नत्र। विश्रत्तत्र लांदिकत्र। महा-त्रांका मित्रियांत छेशत ভয়ানক চটিয়া গিয়াছেন, কিন্ত তাহার। विश्वाम कরে ন। যে গ্লত বাজি প্রকৃত নানা। याश इडेक श्रुड वाङ्गि मञ्चल (मगीयमिश्राव माका थाश क्रा याहेट शादाना, कार्य व गांक यमि প্রকৃত নানা না হয় তাহ। হইলে কেন তাহারা তা-হার জন্য এত হঃখ প্রকাশ করিতেছে?

कानश्र ३०३ न दिश्र । धक्जन देमनिक श्रेक्ष माका निया: इन य्यश्च वाकि य श्रक नाना जोशांक তাহার কিঞ্ছিৎ মাত্র সন্দেহ নাই।

कानश्र १२३ नद्वव । कानश्र व क क क देव ध्वर তাহার আসিফাণ্ট সাহেব এরপ গোপনে নানা স-ष्ठाक माका महे (उहिन य थांत जोहा को हो त अ जीन-वात्र (या नाई। अथारन अई क्रश जनवर अवर छेडा म-न्थ्रा न में जा विनिया (वाध इय य अर्थानकां व मार्ट्या প্রতাহ হই ঘণ্টা করিয়া প্রত ব্যক্তিকে যাবদিক কট প্র-मान करत्रन এवश (म প্রকৃত নানা কিনা, কিয়া দে নানার थवत्र ब्रांट्थ कि न। এই विषया जां हांदक स्रीकांत क-तिर्ड वर्मन।

शं ५ वर्मात्त्र जां ३ ज्वरीय (त्रम १ द्यां म १ द्यां स ग्राहिन जात मकाल यक फिन कार्नाहमत नव दी शतरन कोज कतिएड थोकिएन जानश व्योगिएन तिन् (श्रुत हुश डि (लाय इड्रेंच ना। ध (मर्क

ज्यान वादय अ खलने मग्रस (उन् करिट्ड शांद्रिन डोर्डिन

অয়ুত বাজার পাত্রিকা

## THEATRE.

BEADON STREET PAVILION. Saturday, the 28th November, 1874. BY SPECIAL DESIRE. MACBETH.

क्र प्रशाल

Special Night!! Special Night!! BENIFIT OF BABYO AMRITO LAL BOSE. Wednesday the 2nd December 1874.

শক্ত সংহার

THE GREAT WAR OF KRUKHETRA

Prices as usual. Play to commence at 8. 30 P. M. DEBENDRA NATH BANERJEE, Director.

NOGENDRA NATH BANERJEE MANAGER

## THE AMRITA BAZAR PATRIKA

CALCUTTA-THURSDAY 26th November 1874

WE have to acknowledge the receipt of a Prospectus of a Weekly Newspaper for the discussion of the affairs of Assam. As Assam is now a separate Province, it ought to have a first rate Weekly of its own. But we have very great doubts as to the success of the project. Mr. Valente, who, it appears to be the projector, ought to know that a Paper cannot exist in such a Province as Assam is, without the patronage of natives; and to patronize a paper the value of which is sixteen rupees per annum, dak edition, is utterly beyond the means of most natives. If he, like Mr. Kemp of Dacca, sticks to the tea planters, who alone can pay such a high price, we fear the natives will have very little to do with his paper.

THOUGH not the direct offspring of the Levien case, yet indirectly connected with that case, is a libel suit of great interest which is he ing in the Rungpere Magistrate's Cou It h Jear and half ago that an anonymous petition was submitted to the Government of Bengal against Babu Gopal Chandra Mookerjea, Executive Engineer of that District, setting forth certain illegal acts supposed to have been committed by the Babu and his Assistant. It was was stated in the petition that if the evidence of Mr. Glazier, the District Magistrate, of Babu Krishto Dhone Ghose M. D. and Babus Janooke. Bullab's Sen, Jugodeendra Narain Roy Chowdhry, Mohima Ranjan Roy Chowdhry, Romonee Mohan Roy Chowdhry &c. &c. were taken, the statements set forth in the petition would be clearly proved. The Bengal Government immediately demanded an explanation, but whether any further notice was taken of the matter or not, is not known to the public. But now Babu Gopal Chunder Mookerjea brings a libel suit against Babus Dakhina Mohun Roy Chowdhry, Doyal Sing and Lal Sing; the latter the son of Babu Doyal Sing. Query: Is it a fact that Babu Dakhina Mohun Roy Chowdhry was, while giving his deposition in Uma Charan's case, in Mr. Glazier's Court, unnessarily made to stand several hours? It is however a significant fact, that this case is brought immediately after the Levien case is finished, after the expiration of a year and half, when the petition against Gopal Babu was first submitted. There is another fact worthy of note. Mr Glazier has transferred the case to his assistant Mr. Hampton, for he purposes to give evidence in the case. The defendants should have motioned the High Court to transfer the case from the hands and influence of Mr. Glazier. They can take prompt action and do it now.

There are certain Sub-Divisions in Bengal which are too sacred for the native Deputy Magistrates. There you will always find a European, whether an Assistant or a Deputy Magistrate; and if natives are sent there now and then by mistake or for want of a European, they are not allowed to stay there long. It will be found also, that these Sup-Divisions contain a dozen or half a dozen of European residents; they are invariably placed under the fostering care of Turopean Hakims. We have not the ambition Quinister justice to the ruling race, and we suinister justice to the ruling race, and we slightest objection if Europeans inted to try Europeans; but we cons to be trampled under foot

wave not the least objec-

of natives; but let not there be a sacrifice of justice, a sacrifice of the weak to the strong, a trampling of the inherent rights of humanity under foot. We do not speak of distant Assam, Cachar or Darjeeling; where there are inipenetrable forests, where dead bodies can be hidden, or bones of the male can be transformed into those of the female; but we talk of the most civilized and advanced portions of Bengal. Indigo is extensively cultivated in the north of Jessore and Nuddea, that is within the Sub-Divisions of Magoorah, Jhenida, Koostia, Chooadanga and Meherpore. Now these Sub-Divisions are invariably filled by Europeans. By a mistake, or because Mr. Smith was Magistrate, and Lord Ulicke Browne Commissioner, Babu Shyama Charan Chatterjea was posted to Theneda. For six mouths he was there, and so careful he was in his dealing with the planters that he made over the case of Mr. Meares to Mr. Smith and rarely took any step in connection with the planters without consulting his superiors. But Mr. O'Donnel of the Jhenida obscenity case notoriety has been posted there, and the result is, that the people of Jhenida are disconsolate on account of the transfer of Babu Shyama Charan. Never perhaps in their lives did the people of Jhenida feel what it is to have a police which defended the weak from the strong, and a court which was a protection rather than a source of oppression. That the Court was constituted for the protection of the people, the people never perhaps knew before, they dreaded the courts much more than the planters, but Babu Shyama Charan gave them this idea. Babu Shyama Charan has been transferred and the people of Jhenida know not how to bring him back again. The order of this transfer did not come from Mr. Smith, or Lord Browne, but from high. It is a belief in high quarters that Hindu D puty Magistrates do not tavor the indigo planters. It may ce so, but Hindu Deputies dare not deal otherwise than at least fairly with planters. Mr. Smith though a civilian of high standing, trembled in his chair while during the Meares case the Anglo-Indians howled in chorus. But we know of cases where Hindoo Deputies actually for sook the weak and sided with the planters. Some years ago, a Hindoo Deputy Magistrate, now happily removed from office, fired at the ryots from a planter's elephant, while the planter sat by him. The cap however, probably being owned by a Bengallee, did not take fire and so no life was destroyed. The other day there was, we are told, a similar scene at Chooadanga. Mr. Stevens like Mr. Smith is not a slave, as Magistrates usually are, of the planters; and he had posted a Hindoo Deputy at Chooadanga. The Deputy was however found in a planter's boat, and in friendly terms with the planters, and the gentleman himself complained that he was assaulted by the ryots while found there. That gentleman is removed to his head quarters; but Mr. Deare of Magoora has it appears taken a Mourashee putta of the Magoora Sub-division. The other day while we were sitting in his parlour with Baon Chandra Coomar Roy of Narail, a post letter was handed to him. He perused the contents and with a smile requested us to do the same. The letter came from Magoora, and though we cannot desclose its contents, it was evident that the people of Magoora had not much confidence in Mr. Deare. There is ample reason why this confidence should not exist. The ryots of Magoora are not pulling well with the planters and Mr. Deare is a close friend of the latter. Whether he deals even handed justice to the two classes, Mr. Smith, the District Magistrate knows best; but we know that while Magoora is in a ferment, the Depenty Magistrate goes to the planters and the planters come to him, they dine and pass their leisure hours together. However immaculate Mr. Deare might be, confidence under such eireumstances cannot exist; but we can say more. We believe there are very few men under the sun who can resist being influenced under the circumstances into which hir. Deare is placed. That he is now and then so influenced is clear from the case of Mr. Clarke vs the boona coolies in which he punished the assaulted boonas and allowed the assaulting shaheb to

While talking of sub-divisions we must not omit to mention that Mr. Smith kindly placed Babu Umacharan Gangoollee, one of the nicest and mest hardworking men in the Executive service at Naral. This is also a sub-division exclusively reserved for the Europeans for reasons best known to the authorities, for we believe there are no indigo planters in the sub-division. It is perhaps on account of the powerful Naral Babus; but the Babus are, whatever their forefathers might have dents, while protected by been, now perhaps the quietest Zemindars in Baugal. We hope Babu Umacharan will not be transferred and that the rumour of his transfer

The following has been sent to as by a native gentleman of some standing in the service. Itis an abstract of a conversation which is said to have taken place between him and a high Englishman:--

N. Good morning Sir. E. How are you Babu?

N. I am quite well, I thank you Sir

E. Take your seat. (Orderly brings in a cha'r)

N. Thank you Sir. E. Have you heard of Mr. Meares' release.

N. Yes Sir.
E. What do the natives say about the case. N. They believe the case to be perfectly true and that

Mr. Meares has been very justly punished.

E. I am of the same opinion. N. All high officials are.

E. Why did so many natives sign the Memorial then? N. Must be to serve their own end Sir.

Some of these people are servants to those Shahib logs who have signed.

E. No. No. No. Some of the Shababazzar coomers have signed. N. They are very obliging people. Don't you see

sir, How Raja Harrendra Krisna manages stick to e idaha?

E. Is it not derogatory to a Raja to serve as a Depu Magistrate.

N. Necessity has no law Sir.

E. I say the famine officers are now returning. The will be a wholesale change.

N. Oh. Yes. I say what lot of money has been spent so much as six crores!

E. How much do you think has actually gone to the pockets of the poor ?

N. Poor men have no pockets in this country Sir. E2. What do you mean Babu? The poor men having

pocket they did not receive any thing ? N. Poor men received with unfolded hands and bless

Government, but as they have no pockets the could not save any. E2. You are not very clear Babu.

N. I cannot express myself clearly in English Sir. E. You talk English very well.

No Sir. No Sir. Money have found final rest pockets Sir.

E. Well Babu-don't you think the people will like ou Raj for our benevolence.

N. Yes, those who do not know that you exercise you benevolence at other people's cost.

E. Well, on the whole do people like our raj?

N. To a great extent. E. Not-wholly. Do you wish to be independent Babu

N. We are human beings.

Indeed! N. We wish not only to be independent but also to con quer England and to send out half a dozen of L. G every fifth year on a pay of 3 lacks a year each And a Governor General too and a whole lot Bengallee Babus. What a fine thing it will be s' to get possession of great Britain. If we can re tain possession for quarter of a century we co bring back all that has been taken away fro

Indra, Sir, during the last two centuries. E. You have a very high imaginative mind-Hencefort

I shall call you Indian Milton.

N. But for my eyes sir. E. Pluck them out.

N. I would rather have them than called a Milton.

E. Really why do not the natives like our ia?

N. Because you treat them like dogs. E. But it is the fault of individuals and not of Governme Oh. Sir. Every English man is a Government to

Don't talk nonsense. Now let us have the truth. N. Excuse me sir, don't get angry; because they draining the country of its wealth and we getting impoverished Sir.

N. Well, I need not explain to you. If you can do aw with the P. Settlement, we will be reduced to m agriculturists Sir. E. You ought to be thankful to the English nation

the boon.

N. We are thankful and we are loyal and so we spe out our minds without reserve. E. I have heard many of your countrymen say that

Englishmen of former days had a liking for natives; are you one of those?

N. No Sir. I have heard mny a fool say so Sir. E. No. No. You are mistaken; they did actually you, because your elders were polite and respec

N. You are mistaken Sir. Theo Ranjit Sing was liv Oude was Independent, Delhi had an Empe and English Raj was unstable sir. Were B sians to conquer Afganistan, you will be polite than you are now, this is blunt truth Sir: get angry Sir-I have no sufficient stock of En words, to give a cloak to my expression sir. not a politician sir that I could speak in a po

E You do not seem to appreciate what has been done. the English for your benefit. Look here Babu, Th Colleges, and Schools, Dispensaries, Public-worl Civil and Criminal Courts, the Police, Telegraph

and Railways N. Stop please. Beg your pardon for the interruption sir Without schools you could not get cheap element to work the machinery of Government; if peopl were to die for want of of medicines who would pay you taxes, cultivate your cotton, opium, tra and indigo? without telegraphs and railways you

could not hold India.

E. Chi.! Chi!! Chi! Babu. N. Donot get angry sir, then you will not know the native mind. If you do not find out the malady

how can you apply remedy. E. Not in the least. I am not angry at all.

N. your race partiality is too much Sir. You occupy all the highest posts Sir. Yet you shove in less educated portion of your countrymen in the subordinate Executive service and promote them, overriding the claims of the native officers of superior merits Sir.

E. You are partly right there. N. Again in the Police Sir. You will find the number in the higher grade is more than that in the low the reverse is the case in the subordinate Execut

N. Look into the Civil list and you will find what I

to be perfectly true Sir. E. If so you have a just ground of complaint.

E. Is it? I did not know that.

N. Acting allowance is allowed to police officer. is denied to Subordinate Executive. E. If allowed it would be too trifling but create

confusion in the secretariat.

Your line has been very much improved of late. N. Thanks to Sir Barnes.

E. Would you like to enter the Police as a District Superintendent?

No No Sir.

E. Your prospects are as good, as theirs, I suppose.

N. Not until I live to serve for 40 years more. I wish there were as many first grade Subordinate Judges as there are District Superintendants.

E. You talk very reasonably Babu. But why not get into the police, prospects of promotion are comparatively easy.

E. Why not try and enter the opium Dpt?

N. No entry for natives.

E. Forest. N. Ditto.

E. What will make you a contented race let me know? N. Make us soldiers, help us in conquering the whole of Asia and send us there to govern. We shall then feel deeply grateful to your nation and leave you the field of India to graze upon and we shall go to the other side of the Himalyas and contentedly till the rocky and sandy soil of Thibet and

Arabia. N. I perceive one change Sir in the character of the Englishmen of the present day. They do not like to encourage educated natives.

E. What do you mean?

N. Not 20 years ago Pandit Shirish Bidyaratna married a widow and he was rewarded with the Dy. Magistracy. The two first B. As of the C. university were similarly rewarded. Raja Ram Mohan Roy's cook, on his return from Europe was appinted a Deputy Col., but now no notice is taken even of his great grandson, one of the best educated men in India who has come out as a Barrister. Babu Prosonno Coomar Tagor's Son did not receive any encourogement. These facts make our feelings callous.

E. It is cutchery time. We hope we shall resume our interesting conversation another time. Good morning.

THE LEVIEN CASE. - We beg to draw attention our readers to the rest of the evidence a dduced in connection with the Levien enquiry.

Peary Lal Roy deposed as follows :-I am a pleader practising here from the beginning of 1873. Mr. Levien now and then made an appearance of taking notes. The shesristadar took down notes of my arguments. I recollect the case of Kali Churn Shaha vs. Prosonno Moye Devi, in which I protested against the sheristadar taking notes. The sheristadar was on the bench taking notes of the appellant's arguments when the sheristadar was leaving the bench, 1 told him in Bengali that the other side had administered a bribe, and that, therefore, notes of arguments on that side were taken, whereas notes of arguments on my side were not taken. Mr. Levien heard it, and said he would take notes of my argument, himself. I cannot say whether he understood the whole of what I said; but at least he under-I that I was displeased, or else he could not have told no use to address heran to take notes; but I know it dly. I considered he was only taking notes for show. never attentively listened to arguments; from his appeace he did not seem to pay any attention to the arguments pleaders. When they were arguing Mr. Levien would wn, go to sleep, smoke cigars, read newspapers, write letters, Mr. Levien does not understand Bengali. He never "udgment in Court immediately after the case was venty days, one month, two months and sometimes ter argument before the judgment was deliver-

me for delivering judgment was a month or a after hearing. I recollect the case of Taleb Abdool Suvan. I was employed in that behalf of Suvan; and Mr. Levien passed therein llaneous order. I saw the draft before judgment was d; and the same morning when I came to Court I e judgment. I don't know wheather the judgment was over to the head clerk the yery same day. My cousin Gopal superintended the case of Suvan. He took me some Weekby Reporters and a Civil Procedure Code told me he was going to the sheristadar. He came and handed me a draft of judgment written in pencil nat case, and in the sheristadar's handwriting. I looked 1gh it. My cousin did not tell me the object of his ing the draft to me; but I think it was for me to see her there was any defect. I went over it with care. I well it was in the sheristadar's handwriting. I have vn his writing from my fourteenth year. After perusal urned the draft to my coasin, who took it away. The day I read the Judgment in Mr. Levien's handwriting. a judgments were exactly the same; the expression was the same. The books I gave to Gour Gopal contained rulings and references set forth in the decision. The ic opinion on Mr. Levien's conduct was that the sheristadid everything. It was all the same to Mr. Levien whethe eases were important or not. He did not often er indgments within ten or twelve days. Gour Gopal in agent of Abdool Suvan my client; he was not a tear. The sheristadar was not in the habit of sending of judgments to me. I have cause to think that the us given in the judgment of Suvan were not Mr. Levien's. usons are that Gour Gopal called at the sheristadar's the morning; and probably this caused the sheristadar to ange his mind, and hence the second order reversing the

irst. In criminal cases depositions were read sometimes in the translator's room, sometimes in the head clerk's room Mateur Rahaman deposed as follows:—

I am a pleader in the Indge's Court here. - Uma Churn Sen, the sheristadar, used to sit in Ejlas. I recollect the civl- case of Juggounath Saha vs. Dwarkanath Saha. I was on the side of Juggounath. I commenced arguing in that case when the sheristadar prevented me from doing so, on which I said, "you may either decree or dismiss as you like in your own house, but I will argue here, and you have nothing to do Lere." I think Mr. Levien heard it; for I said it aloud, in an angry tone. Mr. Levien said nothing, and made no sign.

Mohima Chunder Mozumdar deposed as fol-

ows :--I am a pleader in the Judge's Court since 1857. As ar as my knowledge extends, I do not think Mr. Levien took own the substance of the arguments. No day was fixed for delivery of judgments; which were given from two days two months after hearing. The judgment of Dyal Singh's was given after three months. Before I saw it in office, ft decision in Golick Moni's favour was shown to me, raft of which was written in ink in Bengali character, the handwriting of Uma Churn Sen. I saw this draft ten, fifteen, or twenty days before I saw it in office. shown to me, and my opinion was asked as to whether judgment could stand in special appeal. I read that and also the translation of the judgment. There may ae alterations, but the substance of both the draft and lement were the same. I recollect the case

was pleader for the appellant. I read the judgment in that case after it was delivered in office; but cannot say when I read it. I saw the draft of this judgment on the table of the translator Uma Churn Sen. I know the handwriting of Uma Churn Sen, both in English and Bengali. In civil cases the witnesses sat on a bench. In exparte cases the mooktears generally examined them. I was asked to do so, but I never did. Mr. Levien was engaged in other cases when witnesses were being examined. I cannot recollect that depositions were ever read by Mr. Levien, or that they were interpreted to him. I remember the case of Radhica Churn Sen vs. Guardian of Kisto Coomari. I was pleader for Radhica. Witnesses on one side in that case were examined on the 29th November, and those on the other side on the 10th December. I was present at the examination on both occasions, and no memorandum of evidence was made by Mr. Levien. As far as I remember, I say the memorandum, which I now see in Mr. Levien's handwriting was not made at the time witnesses were examined. I was pleader in Nazaruddin's case on his benalf. Witnesses were examined therein, as I see by the nathi, some on the 8th, some on the 9th, and some on the 12th I told Mr. Levien, in English. "Two things cannot be done at the same time." The sheristadar, or the head clerk, was very angry with me upon my sternly opposing. Mr. Levien did not do anything; and the memorandum of depositions of witnesses was not made by him. I have seen Mr. Levien write decisions on the bench, looking at the sheristadar's draft, I saw Mr. Levien writing from the sheristadar's draft, which was covered by a paper exposing only a line or two. On one occasion I read the whole of the draft in the sheristadar's hand writing; and I also saw Mr. Levien copying that on the bench; but I could not read any of the draft when he was copying. I also saw one draft of a decision at Uma Charan Sen's house. I told Mr. Levien one day, on a petition for transfer, that "justice is being miscarried here." My meaning was that injustice was there being done.

Mohesh Chunder Sirkar deposed as follows:-

I am a pleader, practising at Rungpore since December, 1867, more generally in civil cases. I was a pleader on behalf of Dyal Singh in his case with Tara Chand. I argued the case, and in English. I recollect the judgdment was given long after the case was argued. I saw Dyal between the arguing, and the delivery of the judgment. He told me of his visit to Mr. Levien. Some time after the hearing, Dÿal went to my lodging one morning, and told me that he had seen Mr. Levien, and that the latter wanted a draft of the judgment from Dyal Singh. I saw Dyal Singh on several other occasions. On one of them he told me that he had been to Mr. Levien and told him that the Sheristadar wanted 1,000 rupees; and Dyal said that Mr. Levien told him, "If you do not pay Uma Churn 1,000 rupees, you are to lose your case." When Mr. Levien sat to hear civil suits, Uma Churn Sen was engaged at the Bench. Uma Churn generally took notes of the arguments of pleaders. Mr. Levien had a note-book, in which, I believe, he used to write the number of the case, and the names of the parties; but not always that. I do not recollect Mr. Levien taking notes of my arguments. I am fully able to judge whether or not the Judge took notes. By Mr. Levien's appearence I could say he paid no attention to our arguments. 1 do not recollect any instance in which Mr. Levien asked questions: he was not in the habit of asking questions during the arguments. He never pronounced judgmont in my presence. I never héard Mr. Levien pronounce a judgment immediately after hearing the case; except that in some miscellaneous cases he used to write and deliver judgment on the Bench; and that was done at the dictation of the Sheristadar. The Sheristadar sometimes used to write the order upon a paper, and give the paper to the Judge who copied it. Sometimes the Judgments were delivered the day after the hearing, and sometimes two or three months after. I recollect the case of Jogodish Chunder Biswas vs. Abdoollah: the judgment in that oase was in Mr. Levien's handwriting. I saw Uma Churn Sen, who was then translator,drafting a decision in that case. Mohima Mozumdar, who was pleader of the opposite side, saw it. When I read the draft it was completed; both the judgment and the order. This was before the judgment was given by Mr. Levien; I saw the judgment delivered by Mr. Levien. Both the judgments were of the same purport. I recallect the case of Kalı Mohun Kobiraj, a certificate case, under Act 27. Last January 1 argued the case, and Uma Churn Sen, took notes from me and wrote a judgment by pencil, and handed it to Mr. Levien, who copied the same while on the Bench, and passed the order. I saw. Mr. Levien copying the paper which was handed by Uma Churn Sen, whom I saw writing by comparing with the records. Mr. Levien can understand a few words in Bengallee. I do not recollect having seen any translation before appeals were heard. Such is the public rumour that Uma Churn writes the judgments. Such is the public opinion that Uma Churn is the real judge. In my belief the Sheristadar was the judge. Mr. Levien was often very late in coming to Court, sometimes he came at 2 or 3 o'clock. I was employed in Beelash Beebee's case a registration case. The arguing of a case and the examination of a witness took place at the same time. In that case no memorandum of the evidence was made by the Judge. Even in appellate cases he did not make any memorandum at the time; but it was usual to make a memorandum after an appeal had been preferred, to the High court. None was usually made in other cases. In Abdoolah's case, I went and sat by Uma Churn in his room, and then saw the draft of the decision. The draft was lying on the table, and I took it up. I argued Dyal Singh's case. Mr. Levien took no notes of my arguments. Before the delivery of judgment, Dyal Singh came and told me that Mr. Levien asked of him a draft judgment. When Dyal Singh told me that he saw Mr. Levien, and Mr. Levien told him that unless he paid Rs. 1,000 to the Sheristadar, he would lose, this was before final judgment was passed. We could see what Mr. Levein took down in his notebook, because we stood very near him. I don't recollect having seen Mr. Levien taking notes of arguments. He used some times to speak, and sometimes draw pictures but never paid attention. In ex-parte miscellaneous cases I have myself scen Mr. Levien write out judgments at the Sheristadar's dictation. What the Sheristadar wrote by pancil was handed to Mr. Levien, who copied from it; and I afterwards saw it and found it was the judgment in Kali Mohun's case. Mr. Levien wrote his judgment on the back of the petition of that case. Except the case of Kali Mohun Kobiraj, I don't recollect any disputed case in which judgment was passed on the Bench.

Kisto Chunder Sircar deposed as follows:-

I am the Government Pleader since the last four years. During the examination of witnesses, the questions were put in Bengali, and were not interpreted to the Court. There were disputes as to the correctness of the interpretations on several occasions. In almost all defended cases such disputes arose I did not see interpretors sworn. The depositions of witnesses were not read over to them in Court; they were taken out, and then their depositions were read over to them by a mohurir, or an English-knowing clerk. They were not brought back into Mr. Levien's presence. I recollect in criminal cases making objection to the sheristadar sitting in the Ejlas, and he was about to leave; but on looking to Mr. Levien, he was given to understand that he was to sit there. In civil cases there was no routine of business; there were lists of cases but no days were fixed. The cases were brought on fortaring at random. On several occasions cases ere called

ces were passed in the absence of the prisoner; someetimes the day after hearing, and some sines after two or tare days. The sheristadar decided what case was to come up; ne ordered the mohurir to bring any case he thought fit, and it was accordingly brought. The Judge never called up the ease; but the sheristadar did so. The first or second day after Mr. Levien's arrival here the second time, I objected to Uma Churn Sen sitting in the Hilas: he was then train lator. I objected beacause he was then all in all, aid to to do everything; the Judge only sitting on the Bench.

Syama Mohun Chackerbutty, deposed as fol lows :-

I am a pleader in the Judge's Court practi ing here from November or December 1870. I do not remember seeing any translation made a part of the record of cales in which I was engaged. Translations as a rule were not made. Mr. Levier never paid attention to arguments. I have seen witnesses examined in civil cases. In expurte cases, when witnesses were being exammed, Mr. Levien would do other things. Nobody interpreted to Mr. Levien statements made by witnesses. In contested cases, when witnesses were being examined, Mr. Levien was reading newspapers, smoking eigars, but doing no official work. While witnesses were being examined; he would not give order as to the admissibility or other wise. of the evidence. When any such question arose, it was referred so him; but no ruling was ever obtained from him, and the pleaders settled the question amongst themselves. After the witnesses were examined their depositions were taken out generally by the Sessions mohurir, sometimes into the head clerk's office, sometimes into Bengali serisia, and there read out to them. I do not recollect whether any witness was again brought into Court. Whilst the depositions were being read to one witness outside, another witness was being examined before the Judge. Mr. Levien never asked any question to the witnesses as to whether their depositions were correct or not. I don't recollect having seen him giving judgment from the Bench. I have often seen him passing orders from the Bench at the dictation of the sheristadar.

Prosonno Nath Choudry deposed as follows: -

I am a pleader practising in the Judge's Court since May, 1873. I compared drafts of judgments draw by Lolit Mohun in a cattle theft case, and some Be cases, with the judgments written by Mr. Levien. substance of both the draft and judgment was the sam there were only some grammatical alterations.

Gopal Chunder Chuckerbutty deposed as f

I am a pleader, practising in the Judge's Court here no two years. The case of Dwarka Nath Mozamder argued by me and Mohesh Chunder. Sircar 5"ere reference made in it to the High Court, a criminal A draft of reference was shown to me by a Mic Dwarkanath before the order was published. Uma Churn Sen's handwriting, which I know was shown to me to see whether it contained ments I had urged. I read the drafts and also order. I read the reference order the very day To the best of my recollection, it was the same I was present at the examination of witnesses. as also in Sessions' cases. In the latter class questions were put in Bengali by the Gavernment Plender, and the answers were interpreted to the Co lator. The questions were not interpreted. many occasions in which disputes have arisen as to the eccarectness of these interpretations. The depositions were not read over to witnesses in the presence of the Court nor in that of the prisoner. I don't recollect any instance in which witnesses were brought back into Coast, it was not the custom to bring them back.

Tarini Churn Nand de as

I am mohurir of the miscellaneous Judge's Court. The records remain in my the cases are decided, when they are made over to man In a certain case I made over the record to mobafes an the decision. This record did not come to my hand whe. notice of appeal was issued. The memorandum of evidence was prepared after the case was disposed of, and before the notice of appeal was issued, the appeal in that case being probable. In exparte miscellaneous cases, I used to take de\_ positions of the witnesses. In criminal cases depositions of witnesses were read over to them by the head clerk, the Session's mohurir, the accountant, or the accountant's mohurir.

Ashanula Munshi deposed as follows: -I am peshcar in the Judge's Court since 1850. I used

to take depositions of witnesses in civil cases. I have not seen Mr. Levien making any memorandum of depositions. I have never seen him making any certificate to the effect that he was unable to take evidence himself. It is my duty to keep the 'diary. Mr. Levien never used to examine the diary when he signed nor was it ever read to him. Generally he signed the book on the day it was necessary to sign at the time of leaving Court. He also sometimes used to sign it the next-day. He never asked me what was written in the diary. Sometimes I and sometimes the sheristadar would present the book to Mr. Levien; and I was always present when it was presented to him. The times of the siting and rising of the Court were given by guess. There was a clock; but it was wrong. . I remember one instance only when the diary was written on the day, Mr. Mr. Levien was absent. The sheristadar told me to write. The sheristadar came that day at 10 or 11 o'c'ock by way of Mr. Levien's house. Uma Churn Sen used to take records home; no other sheristadar

did that. Lolit Mohun depos. d as follows :-

I am the translator of the Judge's Court. As a rule, trans lations of plaints, written statements were not done. At the instigations of the sher stadar I used to write out judgments and Mr. Levien accepted them without little or no alternations. The memorandum of evidence was not made at the moment but long after the case was disposed of be car case the memorandum was prepared after the months when an appeal was preferred a tinst Court.

Kamakiya Churn Monhkopach e Judge's Court, corrol

-- পাওনিয়ার বলেন যে, যাকু । य । यে । সের আলির इ । अ जार्यनात्क जार्यन करत्रन जाराट नर्ज नर्जन तर्

কোন প্রামর্শ ছিল না। '—ডেলিনিউসে এক জন সম্বাদদাতা প্রস্তাব করিয়াছেন যে, ফিরিজিদিগকে স্থানান্তরিত না করিয়া যাহাতে তা-হারা এখানে থাকিয়া সামাজিক উন্নতি করিতে পারে ভাষার কোন সম্পায় করা কর্তব্য। তিনি বলেন বা-वुत्र। वष् २ त्लारक्य साशाद्यम लह्या भवर्षमण्डेत চাকুরির শতকে নিরনকাইটা অধিকার করেন। ফিরিজিরা রাই হইয়াছে। এটাতে ইংরাজের সংঅব নাই। দরিদ্র । ইহাদের সহায় সম্পতি নাই। সূত্রাং ইহারা জাথির রাজাকে তাহার রাণী বিষ পান করাইয়া নট প্রকাশিত হইয়াছে। পত প্রেরক বলেন ষে, বে কর্ম কাজ পায় না। পত্র প্রেরক এই নিমিত্ত প্রস্তাব ক- করিবার যত্ন করেন। রাণীর সম্পূতি একটী পুত রেন যে গবর্ণ, মণ্ট নিয়ম ককন যে বিনা পরীক্ষায় কেই সন্তান হয় কিন্তু রাজার সন্দেহ হয় যে সে ছেলে (कान बाज कर्म लाख इंट्र ना व्यर जाका करें हिंदन जिन विश्वाम कर्त्रम (य कितिकि मिर्शित मर्कि हिन्दू रूमल्यान भाषिश देषि वना। जोकांत्र विश्वाम (य कितिश्वा ध-(मनीयश्रा जारशक्षा निर्वाध नर् १६ १६ १६ १ वर्ष হরপ তিনি বলেন যে জাতি শঙ্কর ছারা লোকের বুদির छे ९ कर्ग इस अपि मक लि इसी कांत्र कांत्र वन। किंत्रिक्ति জাতিশঙ্কর অতএব ইহারা বুদ্ধিমান। লেখকের এপ্র-खादित ऐएकगा कि डांश जांगत्रा कानि ना। जांज कान जी अजी (मथा हेट जिया कि अकि मिशंक भोंक हिं। है लाक, न्वाधम शामत वलात एय त्रीं उ इहेश एइ हैनि मि मिहे बी जिंद ज्यन व कि ब्रां शिर्म जोर्य जोर्य जोर्य भगारमत जांशिंख नाई। उट्ट जिनि शतीकांत्र कथा कि ल(यन जारा जागता वृत्याः जारित नारे। गुमकी, श्री यां जिस्के ही, जब जिल्ही, टेकानिंड, जार्जाइ, रिक्षित्रभित्र शङ्खिमकलं वड़ वड़ कमा ७ भन्नीका घाता निया १६७७ इय़? एट्व ज्याभा कर्म का अव अव यान भवीका लगालीत लाईगा कतिए जारात्र रेक्ट्रा गर्तन তাহাতে ভাষরা সম্পূর্ণ সমত আছে। পত্র প্রেরক धक अभिन जारवमन शवर्गिएटे जर्भन करून, जागता সকলে তাহাতে স্বাক্ষর করিতে সন্মত আছি।

— মুরাটের এক দল ২িকের বিক্**নে** গুজারাট্মিত্র ট্র वकित गक्षमा पार्श्व क् ब्राट्मा

— गा-भा जब मत्था (कारकान्टमंश मन्यों जि त्य येष जोशां अध्वात लोग श्रीन श्रा मोलिय (ज-) लां (ज महल दलांक बार एं गूना गृंश हरेश ह।

---মুরেরা মুসলমান কিন্ত বন্য বরাছের মাংস আ-कांद्र कः द्र । ध्रामनीय युमलगात्नद्रा धक्था छनिया जावाक इंस्वम। वमा वजाइ ७ कुई एउन माश्म हिन्दू-मिट्शेर्ड जोर्रेट्रेन श्रिक विशिष्टि।

मिश्र जारिय (वल विভिश्नाद अव है। वल इहेरव।

- क्षांन तम मन्द्रिक अकि दिश्वरल मक्स्मा र-इं शा शिशार्छ। पक छन धनी पकि विधवा द्रम्भीत श्रामि छिरकाल हे मारहत यान खाय पहे कार्या धावर्छ इहें शा एक्ट्र निमिल गांकूल इन। धरे तमनी है जी हिनी म। जिनि रहलन (य शे.क्नी जिन्न जात्र को इंति अ भागि आइन कितिद्वनमा। मार्ट्य थे, छोन। कोएडिंड जिनि कि इ विश्वादन পড়েন। তিনি ঐ স্ত্রী লোকটির নিকট জিড্ডাঁসাকরেন। (य यि कि जिनि शिल्मी अर्थ अर्थ अर्थ कर देन जारे। रहे। ल जा-হার বিবাহে কোন, আপত্তি অ'ছে কি না। রমণী ব- ইহাদের আত্মীয় স্বজন সন্ধান্ত ব্যক্তি, স্তরাং ইহা-্লেন তাহা হইলে তাহার কোন আপত্তি থাকিবে না। দিগকে অনায়াসে জামানতে রাখা যাইতে পারে। मार्टिन निर्नाहित निर्मा छ ममार्ति ह शूक्रक शृक्षीन. धर्म मोजिस्के हे मार्टिन लग मार्टित्व खार्थना धारा পরিত্যাগ করিয়া য়ীহুদী ধর্ম গ্রহণ করিলেন। তিনি করেন নাই। মাজিষ্টে ইহাদিগকে সেননে সোপোর্দ एक खेत निकरे भगन कतिया विवाद्य थाछा व कति कि इंगाद्य । লেন। কিন্ত জ্রী লোকটি তখন বলিলেন যে, তিনি পরে । — সর সাইমূর ফিটজরন্ত এক খানি বিলাতি কাগজে বিষ্টেগ করিয়া শ্বির করিয়াছেন যে, য় হুদী বংশ হইতে। লিখিয়াছেন যে, ১৮৭০ খুঃ তাবে বোসাইয়ের এক জন (य हा जि हे ९ शिंख मां इहेग़ाट्ड डाइ। कि जिन दिवाइ र्हित्वन ना। मार्ह्य ध्राम छ। य २० इ। जात छ। कात मानी खी बाकिरित बार्य नानीन कि श्रार्छन।

भिशा विदात कला जातस इरेरव। त्लात विभिन्न थन निम विष्ठात स्थित व (श) हित्वन।

এই জন সংখ্যার রন্ধি দেখিয়া অত্যন্ত ভীত হইয়া-ছেন, কিন্তু ভয় কি। অকটবর মাদে যত লোক জ নায়াছে তাহার শত করা দশ জন অয়াভাবে অ-कारल शक्षव शाहरत, जात मन जन महिए जो निवज्ञन (जित्न शमन करिया। मानव लीला मखद्र करिद्र, व्याद याक्षत्र। अर्छ जाक्षत्र। देश्त्रांकित्रित्र स्ट्यं निर्मिष জग्र श्रञ्च क्रियाट्ड। তাহারা মরিয়া গেলে তাহাদের कछ।

—(वाञाः भारकटि जात्र धकि। विव शास्त्र कथा তাহার নিজের নয় এবং এই নিমিত্ত তিনি রাণীর প্রতি অবত্ন দেখান। বোধ হয় এই নিমিত রাণী तांजाटक नश्चे कदिवात निमिन्न क्रन मश्कल्य इन। तांगी मिछोदन्न मदन ताजादक विष दनन। त्रांजा मिछोदन्त একটু আহার করিয়া অসুখ বোধ করেন কিন্তু অতি লইয়া নেপাল পর্বতের মূলে একটি তাঁতু ফেলিয়া অপ্প পরিমাণে মিফ্রান্ন আহার করায় তাহার তাহাতে। অবস্থিতি করেন। এই স্থানে তাহারা কতক দিন বাস विट्याय क्वि इश्वाइ। जिनि धरे मिखीत जोरात करमक জন আত্মানকে আহার করিতে দেন। তাহারা ইহা করিতে সেই স্থানে আসিয়া উপান্থত হয়। নানা थाইয়া ভেদ वमी করে। রাজার ইহাতে বিশ্বাস হয় যে সয় বিপদ দেখিয়া তাড়াতাড়ি তাম ভাজিয়া নে मिछोटन विष ছिल। जिल जन कर्यक्टक म्हण्य क्रिया তাহাদিগকে तनी कित्रशंद्वन।

—२७७ नत्वस्त जातिस्थ अत्विक्षा চুরির মকর্দমা কলিকাতার মাজিইটে ডিকেন্স সাহেবের নিকট উপস্থিত হয়। যাজিষ্টেট সাহেব ডিফোল্ট, করেন, তখনই তাহার। আপনাদিগের অন্তোষ্টি ক্রিয় ইনেম্পেকটর রিড এবং ডেপুটি পোফ্টমাফার ডিজু- করিয়া যান। তাহারা বলেন যে, ভারতবর্ষের পাবত (জর সাক্ষা গ্রহণ করেন। আমরা পুরের প্রকাশ করি-शाहि जिएकान् हे मार्ड्ब कि जला इंडानिगरक धर्तन। ডিফোল্ট পূর্বে এ সম্বন্ধে যেরূপ এজাহার দেন ইহাতে রাই হয় যে নানা সাহেব নেপাল জললে ও वारात प्रहे जन माकी जिशापत जननवनीए जार्ग कित्राहिन। भवं लिथक य गाजित निकि । তাহার পোষ্কতা করে। বালকদিগের সমর্থনার্থে ल्ला भाइत नियुक्त इन। जिनि माकी पिरांत উপর অধিক জেরা করেন না। মকদ মা সেসনে इইবে, তাতি জঘনা কার্যো নিযুক্ত করেন। ১৮৬ সম্ভ তঃ সেই খানে ইহার জেরা হইবে। তিনি বালক- আর কয়েক জনের সাহাযো নামার নিকট দিগকে জামানতে হাজির থাকার জন্য মাজিষ্টেট য়ন করে। এব্যক্তি চিন দেশের সীমানাও সে সাহেবের নিকট প্রার্থনা করেন। তিনি ব'লেন যে লোকের আচার ব্যবহার ভাষা প্রভৃতি সম্বন্ধে বালক দ্বরের বয়স অতি অপ্প উদ্ধা ১৬ কি ১৭ বংসর বর্ণন করে তাহাতে পত্র লেখকের সম্পূর্ণ বিশ্বাস হইবে। ইহ'তে যেঁ তাহারা অপরের কুপরামর্শ ভিয় যে এ মিখ্যা গণ্পা নহে। এই ব্যক্তি বলে যে নানা এরণ কাজ করিয়াছে ইহা বিশ্বাস হয় না। বিশেষতঃ পনার একটা অজুলী তেছদন করিয়া উহা দাহন ডিফোল্ট সাহেব তাহাদিগকে গোড়া গুড়ী আশা অন্তোফি ক্রিয়া সমাধা করে, স্তরাং প্রত দেওয়াতে বোধ হয় তাহারা ইহাতে প্রবর্ত হইয়াছিল। আঙ্গুল কাটা কিনা তাহা দেখিলে অনায়াসে —ইংলিশ্যান শুনিয়াছেন যে আগামী ২৯ সে ডি ইহা কখনই বিশ্বাস যোগা নহে যে ডিফোল্টের নিকট যায় যে এ ব্যক্তি প্রকৃত নানা কি না। এই বার কেবল প্রশ্ন চুরির প্রস্তাব হইয়াছে। তিনি বরা-वित्र अहे क्रिश कार्या वार्श्व इहेशा शार्कन पवर महलवादि य पिन इहेट हेश्न ए मावा कित्रशाहन थार्कन তবে তাহাকে প্রশংসা করেতে হইবে। লে। मार्ट्य जार्ता विलिलिन य देशता वालक, धक्रथ कार्या (य जाइन मञ्ज जन, य जाइ। जाइ। जाइ। जावशं जिल ना, তাহারা পরের চক্তে পড়িয়া এরপ কাজ করি-शांट्या विद्यायण्डः इंशांत्रा मञ्जाख राज्यित मखान पद्

ञाजि डेक कर्य होत्री मश्चाम शांन य नाना माद्द जाहात ज्यंत गृह्य वाम क्रिंडिट्ड्न। मानात ज्यंत माल अकिति ब्रांकां व रिवाक इया विश्वाचे क्रेट कर यक ने (काल मृत्य वाजाव वाज भानी वव नाना (महे वाज धानीएक कार्वास्टिक करिए हिन। धरे बाका धरे ममग द्याचा च्टा हिटलन। कर्ज्यकी दश्यो जाराक विल्लन मज़ात मश्था। र भई कथ बाद्धे य जाहार खी नागाक नाहिष्ड छान

सार्थित । साला द्वाना पाना ताना न मन्या र চিত্ৰ লাই, কিন্তু তিনি আজ ছয় মাস বাটা ছাড়া?... जिनि त्रांक धानीत कान रित्यम मस्मि त्रांद्यन न।। र्ज् शक दिश्वा मसाम खना माज बाजाब शे, दश করিবার নিমিত্ত লোক পাঠান কিন্তু তাহারা তথায় গি শুনে य जाशासित भौ हिवात थक घषी शूर्य खे गां (शांशांत्व बांक श्रंह शिव्यांशां किवियां कि পরে এই রাজা স্থাকার করেন যে তাহার বিশ্বাস তাহার জो नामादक गृह्य আতায় দিয়া ছিলেন, र जिनि जारा किছूरे जानिएन न।।

— नागा मयदक देशलिणगादिन এकथानि वाि जगा ज्वानी ियान् जिश्ह नानाव (निर्द জঙ্গলে मृত্যুর কথা যে প্রকাশ করে দে जली (निर्णाल এই त्रश द्राधे (य नाना मार्थि ज्रात थ जारा करतन এवर ५क्षण ताको इहेवात (इडू अ ১৮৫৯ খঃ অব্দে নানা, তাহার ভাতা বালারাও এব शटखं त्रांका (मिव वकम् मिश जातक देनना मामः क्रिटल, इश्ताक्रितिशत रेमना नानात जनुमन्नान পালের মধ্য দিয়া চিন রাজ্যের সীমানায় উপস্থিত হন। मिथात्न এकि इंड् निनी भात इहेशा थात्र अर्रात्र्य নামক একটি প্রামে গিয়া অবস্থিতি করেন। যখন ভাহারা পুরে বাসস্থান পরিত্যাগ করিয়া চিনাভিমুখে যাত ভূমিতে তাহারা আর পদার্পণ করিবেন না, স্বতরাঃ वशात्व जारलाकि किया जगांधा कित्रा मस्ति धावन कर्त्रन (म ১৮৫२ थ, जारम नाना कर्ड वन्तो इया अवाङ्गि ভज वश्नाङ्गाङ किछ ना

— छ। इयदमञ मञ्चापपाञ। बहेदलक माद्द्वः — वदशानात विय शादनत मकर्मगात व्यन्नकान इ वांतड कडक मचान वांहित इरेगांट्य। इंशांट्य थ्रव इरेशाट्ड (य, शूटक (यर वाक्तित देशत मत्म र रश वादा पृष्ठ इरेशाट्ड। रेशाप्त मत्या वक जन इका । शृदन वज्ञमांत्र अहेकांत्रक विष था छशा लहेंग्र। यथन शांन यार र्य उथन जाराज गाया व वाजि मश्निखं हिन। व वाङ्कि (बिमाट्ड एवेब हिंगिनाब, जाशह कर्लन किशंदबब यथन थाना প্রস্তুত হইত তখন উপর হইতে আদিয়া এ वाङ्कि जोश्र होक्यमिटग्र माश्या क्यि । धरे वाङि वटि धरेक , तत निकि इरेट विजन शांत ना, किल रेरात श्वता जाशत कोर्धानियुक जाः । य बाकि दन नि. ७ . छ । जिल्ला कि विष जानिया (नय महमा তাহার ग्रा इहेशाटि । তাহার মৃত্য হওয়া মাত্র जाराज भाग मार्न क्या रस। अरे जाश बादे या अरे वाजि বিষ পান করিয়া প্রাণ ত্যাগ করিয়াছে। আর একটি जाक्ष्या विषय अहे यि कर्नल किया जाराज जाराज मजनर यद्धा (य विष एनिश्वाद्वा वायनि वायो मादः नामक अक वाङ्कि वदमा इहेट शमन कद्वन। वावो म (इव वदमाद এक জन श्रांडन क्लोजमात। अहे क्लों मादात अहेकदत्र स्थात जाजा मार्थिजा जादि।